ओम् शान्ति 24-6-05 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश – ऑक्सफोर्ड से (गुल्जार दादी)

आज अमृतवेले जब बाबा के पास वतन में पहुंची तो क्या देखा, बाबा सामने खड़े हुए बहुत मीठी दृष्टि दे रहे हैं। मैं दृष्टि लेते-लेते बाबा के नजदीक पहुंची तो बाबा बोले – ``आओ बच्ची, आओ मेरे दिल के दुलारी बच्ची आओ''। ऐसे मधुर बोल सुनते मैं बाबा की बाहों में समा गई। कुछ समय तो उसी प्यार में लवलीन हो गई। फिर बाबा ने पूछा बच्ची आज क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा आज तो सभी के दिल में मम्मा की विशेष याद है। साथ-साथ जो भी एडवांस पार्टी में महारथी गये हुए हैं उनके लिये याद लाई हूँ। इतने में बाबा ने ऊपर नज़र की तो हमने देखा यहाँ की सब दादियां और अनन्य भाई बहिनें बाबा की बाहों में आ गये। फिर सामने से मम्मा के साथ एडवांस पार्टी का भी लश्कर आ गया। तो बाबा ने कहा वह है एडवांस पार्टी और आप सब हो एडवांस स्टेज वाले। फिर बाबा ने कहा आप एक दो में मिल जाओ। फिर तो एक-एक, एक दूसरे से गले मिल रहे थे। वो सीन बहुत ही अच्छी थी, वो लोग इधर आ रहे थे और हम उधर जा रहे थे और गले मिल रहे थे। यह मेला था एडवांस जाने वालें और एडवांस स्टेज वालों का।

बाबा ने कहा मम्मा आपको सभी बहुत याद कर रहे हैं। फिर मम्मा ने कहा बाबा आपने मुझे पार्ट बजाने भेजा है। तो बाबा ने कहा आपको स्थापना के लिए भेजा है। आपका पार्ट आदि से ही विशेष रहा है, उस पार्टी में दीदी, विश्व-किशोर भाऊ, पुष्प शान्ता दादी, आलराउन्डर दादी आदि थे। आपका पार्ट यहाँ भी स्थापना में हीरो पार्ट रहा है तो नई दुनिया की स्थापना में भी हीरो पार्टधारी हो। आप गोल्डन एज के लिए गोल्डन स्टेज वाली आत्मा हो। मम्मा ने कहा आपने जो पार्ट दिया है वो हम बहुत अच्छी तरह से बजा रहे हैं। फिर बाबा ने कहा आज आपका ही दिन है तो आप ही सबको सन्देश दो। मम्मा ने कहा जो भी बाबा के मुख से महावाक्य निकलें वो प्रैक्टिकल में लाने वाले सभी लायक बच्चे बन जाओ। साकार में भी मैं ऐसा ही कहती थी कि बाबा का कहना और हमारा करना। रोज़ बाबा के महावाक्य सुनते हो, उनको सारा दिन होमवर्क समझकर करना। मुरली में चार सबजेक्ट रोज़ होती हैं - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। तो मन को होमवर्क में रखने से जल्दी बाप समान बन जायेंगे। बहुत सहज है। आज बाबा ने क्या कहा वो याद रखो और मुरली के बाद अपना टाइम टेबल बनाओ कि आज क्या करना है।

फिर बाबा ने दीदी को कहा अपनी दादी से तो मिलो फिर दोनों का मिलन ऐसा हुआ कि उनके नयनों से वो प्यार दिखाई देता था। दीदी ने कहा कि मैं यही चाहती हूँ कि एडवांस स्टेज वाले बाबा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव और ज्यादा बढ़ायें। मैं तो यही दो शब्द कहती हूँ- आना और जाना। साकार में भी मुझे यही याद रहता था - अभी जाना है और राज्य में आना है।

विश्वकिशोर भाऊ से निर्वैर भाई, रमेश भाई और बृजमोहन भाई ने मुलाकात की। उनको भी कहा आप भी कुछ बोलो। भाऊ ने कहा मेरे तो यही दो शब्द हैं कि सदा बाबा का हाथ और साथ अनुभव हो। साथ अर्थात् बाबा के साथ कम्बाइण्ड और हाथ है बाबा की श्रीमत। यह दो शब्द याद रखेंगे तो बाप समान जल्दी बन जायेंगे। फिर सभी एक दो को देखने लगे। फिर मम्मा ने कहा इतना ही ठीक है, अब बाबा बोले। फिर बाबा ने कहा समय और स्वयं को याद रखो। समय को सामने रखो और स्वयं को देखो वा चेक करो। बाबा हर एक को देखता रहता है। एक एक की विशेषता भी देखता है तो कमजोरी भी देखता है फिर दीदी ने कहा बाबा आप देख करके क्या करते हो ? बाबा ने कहा विशेषता देखता हूँ तो वाह बच्चे वाह करता हूँ और कमजोरी देखता हूँ, तो बच्चों को पावर देता हूँ ताकि वह कमजोरी खत्म हो जाये।

फिर बाबा ने कहा अब एक दो को भोग खिलाओ फिर सभी ने एक दो को खिलाया। फिर मम्मा और दीदी ने कहा कि बाबा आज तो आपसे भी भोग खायेंगे। तो फिर बाबा ने एक एक को गोदी में लेकर भोग खिलाया। तो आज सबने दो बार भोग खाया फिर बाबा ने कहा अच्छा अब सभी मिलकर डांस करो। तो सबने बहुत अच्छी डांस की। बाबा बीच में खड़ा था और सबको दृष्टि दे रहा था। तो मुझे साकार की याद आ गई, जब साकार में बाबा सब बच्चों के बीच खड़ा होकर दृष्टि देता था और सभी डांस करते थे। फिर बाबा ने सभी को छुट्टी दी और हमें भी साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम् शान्ति।